महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का रायल ग्रुप आफ इन्स्टीट्यूशन्स के वार्षिक उत्सव में उद्बोधन

स्थान:- भोपाल, दिनांक :- 5 मार्च, 2013 समय :- दोपहर 2-30 बजे

रॉयल ग्रुप आफ इन्स्टीट्यूशन्स की स्थापना के 16 वर्ष पूर्ण होने पर संस्था के अंतर्गत संचालित सभी महाविद्यालयों के संयुक्त वार्षिक उत्सव में उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मैं इस अवसर पर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए अभिभूत हूं। मैं इनको बधाई देता हूं और इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

वर्तमान समय में शिक्षा की महति आवश्यकता है, देश के हर नौजवान को शिक्षित करके ही, हम देश का चहुंमुखी विकास कर सकते हैं। शिक्षा बच्चों को सुसंस्कृत और सभ्य बनाने का प्रभावी अस्त्र है। मैं छात्रों से कहना चाहता हूं कि वे शिक्षा के द्वारा अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करें और अपने साथियों और आस-पास के लोगों को नैतिकता के प्रति जागरूक करें।

हमारी संस्कृति और सभ्यता बहुत विशाल और लोकप्रिय है। हमारे देश में अनेक प्रकार के धर्म, जातियां, भाषायें हैं। इसके बावजूद हमारा देश एकता और धर्मनिरपेक्षता के साथ विकास के पथ पर अग्रसर है। यही कारण है यहां कि "अनेकता में एकता'' की मिसाल पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। सभी लोग एक दूसरे की संस्कृति और परम्परा का सम्मान और आदर करते हैं। शिक्षा भी हमें यही सिखाती है।

महाविद्यालयों में इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन से छात्रों और अभिभावकों को शिक्षकों से परस्पर मेल मिलाप और आपसी समन्वय का अवसर प्राप्त होता है। वहीं वर्ष भर कठिन परिश्रम और अध्ययन करते रहने से छात्र मानसिक और शारीरिक रूप से तनावग्रस्त हो जाते हैं इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन तथा इनमें भाग लेने से उन्हें राहत मिलती है।

महाविद्यालयों में अच्छी शिक्षा देने के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों से, सर्वगुण सम्पन्न पीढ़ी का निर्माण होता है। शिक्षा विकास का एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिससे युवा वर्ग को स्वयं के विकास के साथ-साथ, समाज और राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए आसानी से अग्रसर किया जा सकता है। यह तभी संभव है, जब हमारे शिक्षा संस्थान अपनी भूमिका समुचित रूप से निभाएं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था को प्रतिष्ठापित करने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर समग्र प्रयास करें। वर्तमान समय में शहरों में तो शिक्षा का विकास तेजी से हो रहा है। परन्तु ग्रामीण और

पिछड़े क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता और व्यवस्था अभी संतोषजनक नहीं कही जा सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी छात्र प्रतिभा को उसी तरह अपनी प्रतिभा और क्षमता का प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाना चाहिए जिस प्रकार शहरों में छात्रों को मिलता है। महाविद्यालय द्वारा विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है। जिससे यहां के विद्यार्थियों को महानगरों में जाने की आवश्कता नहीं है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि यह महाविद्यालय अपने छात्रों को स्वच्छ और सुंदर वातावरण उपलब्ध करा रहा है। छात्रों की अभिरूचि का ऑकलन उनके विद्यालयीन शिक्षा से नहीं किया जा सकता, बल्कि उनके अंदर छिपी प्रतिभाओं को बढ़ावा देकर और उसको प्रदर्शित करने का अवसर देकर किया जा सकता है। ऐसे कार्यक्रम छात्रों के कलात्मक, सांस्कृतिक और तकनीकी अभिरूचि की प्रतिभाओं को प्रोत्साहन के साथ-साथ आपस में सहभागिता की भावना को भी बढ़ावा देते हैं।

मुझे आशा है कि छात्र-छात्राएं केवल प्रदेश में ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी भाग लेकर अपना, अपने परिवार एवं अपने महाविद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

मैं इस इन्स्टीट्यूशन्स के पदाधिकारियों, शिक्षकों और छात्र-छात्राओं को एक बार पुन: बधाई देता हूं ।

जय हिन्द।